MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Prof. Rajani Shikhare

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH - Prof. Rajani Shikhare

Publisher	:	Anand Prakashan, Jaisingpura, Aurangabad.(M.S) Cell : 9970148704 Email: anandprakashan7@gmail.com
©	:	Author
Typeset At	:	Anand Computer Aurangabad.
Edition	:	December 2020
ISBN No	:	978-93-90004-07-2
Cover Design	:	Aura Design Mumbai.
Printed At	:	Om Offset Aurangabad.
Main Distributor	:	Anand Book Depot Jaisingpura, Aurangabad - 431004
Price	:	₹ 120 /-

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

INDEX

Sr.No	Title	Page. No
01.	विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना - **प्रो.रजनी शिखरे**	07- 09
02.	संत साहित्य में विवस्था का विरोध - **राजाराम बाबासाहेब जाधव**	10 -12
03.	स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियो का महत्वपूर्ण दस्तावेज : 'पूरब खिले पलाश'-**संतोष नागरे**	13 -17
04.	होय ! लेखक घडवता येऊ शकतो - **डॉ. समाधान इंगळे**	18 - 21
05.	अण्णाभाऊ यांची लोकनाट्ये - **डॉ.संदीप अ.बनसोडे**	22- 26
06.	''आधुनिक कुटूंब व्यवस्थेतील नाते संबंधातील द्वंद्वावर भाष्य करणारे नाटक - नथिंग टु से'' - **डॉ. संदिप बनसोडे**	27- 29
07.	Realism In R.K.Narayan's Novel The GUIDE' - **Dr.V.S.Bandal**	30-38
08.	Absurd Elements in Harold Pinter's The Birthday Party, The Caretaker and The Homecoming. - **Jadhav Arun Malhari**	39-41
09.	Global and International Evidence-Based Library Activities and Demand of Health Librarians - **R.B. Pagore**	42-52
10.	Study of Second ARCs view on Police Reforms. - **Hanmant B.Helambe**	53-57
11.	Capital Formation In Agricultural Sector - **Mr B. S Jogdand**	58-61
12.	'Farmer suicide a social problem' - **Mr. R. B. Kale**	62-66
13.	The Role of Opposition Party In Indian Democracy. - **Dr. S.N. Satale**	67-71
14.	Impact of E-Commerce in Rural India - **Dr. Waykar Vivek**	72-77
15.	A Study of Commercial Agriculture: Issues and Challenges before ancestor agriculture in India. - **Sandip B. Vanjari**	78-82
16.	Synthesis, Characterization and Antimicrobial Analysis of Some New Pyrimidines Containing Pyrazole Moiety. - **Amol J. Shirsat*, Balaji D. Rupnar, Sunil S. Bhagat**	83-88

1

विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना

प्रो.रजनी शिखरे
प्राचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
गेवराई जि.बीड

ग़ज़ल उर्दू भाषा का स्त्रीलिंगी शब्द है और उसका अर्थ है 'प्रेमिका से बातचीत' करना। हिंदी में ग़ज़ल अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धामिक यथार्थ को प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही है। समकालीन हिंदी ग़ज़ल अपने समाि के असंतोष, असहमति, आक्रोश और प्रतिकार के रुप में अभिव्यक्त होती रही हैं। हिंदी ग़ज़ल यथार्थवादी कविता का एक रुप है। जिसने भारतीय जनमानस को प्रभावित किया है।

दुष्यंतकुमार हिंदी ग़ज़ल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। जिन्होंने समकालीन हिंदी ग़ज़ल को एक नई दिशा दी है। राजनीतिक क्रूरता और राजनीतिक यथार्थता को उन्होंने समाज के सामने रखने के लिए ग़ज़ल विधा को चुनकर उसे न समृध्द किया अपितु एक नयी विधा के रुप में उसे स्वतंत्र पहचान दी है। 'समकालीन हिंदी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना मुख्य रुप से दुष्यंत कुमार के समय में आयी है। आपात्काल के समय किसी में साहस नहीं था कि वह परिस्थितियों को चुनौती दे सके। ऐसे विद्रुप समय में तमाम दबावों के बावजूद उन्होंने ग़ज़ल से जो क्रांतिकारी चेतना प्रवाहित कर दी, वह हिंदी ग़ज़ल की विधि बन गयी।'[१] इस तरह हिंदी ग़ज़ल ने दुष्यंतकुमार से लेकर आज तक अपने वर्तमान समय की समस्याओं की यथार्थ अभिव्यक्ती की है।

विनय मिश्र जी ने वर्तमान समय की विडंबनाओ, क्रूरताओं एवं विसंगतियों को अपनी ग़ज़लों के मध्यम से बयान किया है। विनय मिश्र अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक यथार्थताओं को अभिव्यक्त कर भारताय जनमानस को सचेत किया है।

विनय मिश्र की ग़ज़लें भारताय आम आदमी का प्रतिनिधित्व करती हुई दिखाई देती है। विनय मिश्र की ग़ज़लें शोषण की चक्की में पिसते आम आदमी की दर्दभरी दास्तान है। आम आदमी की संघर्षगाथा के माध्यम से विनय मिश्र भारतीय जनमानस के संघर्षमय जीवन के यथार्थ को बयान करते हुए उनकी सदियों की चुप्पी को तोड़ना चाहते हैं।

'लड़ाई हार भी जाऊँ मगर संघर्ष बोलेगा
मेरी ग़ज़लों मे गूँगा देश भारतवर्ष बोलेगा'।[२]

इस तरह विनय मिश्र की ग़ज़लें राजनीतिक व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाती हैं। जिसमें अपने समय और समाज जीवन की प्रतिध्वनि हमें स्पष्ट सुनाई देती है। नागरी जीवन की समसयाएँ सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना उनकी

ग़ज़लों में स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। आम आदमी अपने उपर होनेवाले अन्यय -अत्याचार से बेख़बर होने से बेहाल है। आम आदमी में अपने शेरों के माध्यम से चेतना जागृत करते हुए विनय मिश्र कहते हैं-

'तराशी हुई नोक पर है सियासत
जिसे चुभ रही है वही बेख़बर है।'[३]

देश को आजाद हुए ७० साल हो गए है परंतु इस लोकतंत्र के रक्षकों ने भ्रष्टाचार के माध्यम से अपनी ही झोली भरी है। जिसके कारण आम आदमी अपने अधिकारों से वंचित रह गया है। उसे अपनी प्राथमिक जरुरतें पूरी करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। बेजान आजादी में मंत्री और प्रमुख नेताओं की छवि उन्हीं के शब्दों में स्पष्ट हो जाती है -

'आज़ादी बेजान पड़ी है कैसा मंजर है,
अंधे राजा गूँगे मंत्री सौनिक बहरे हैं।'[४]

नेताओं के नौटंकी भरे जीवन को उद्घाटित कर विनय मिश्र उनकी स्वार्थलोलुपता और झूठी राजनीति की पोल खोल देते हैं। नेता बनने के लिए केवल खादी पहनना जरुरी नहीं है। उसके लिए अपने सामाजिक दायत्व का कर्तव्यपालन करना भी जरुरी है। विगत सत्तर साल से हमारे देश के नेता भूख की समस्या को नहीं सुलझा सके। आज देश में बहुसंखय जनता को भरपेट खाना नसीब नहीं होता। केवल चुनाव के समय जनता को सपने दिखाकर उनकी उम्मीदों के साथ खेलना आज के नेताओं की नौटंकी है। यह उन्हीं के शब्दो में देखिये -

'खादी जो पहिने वो नौटंकी में
अपने को लीड़र ही कहता है जी।
बातों से, सपनों से, उम्मीदों से
भूखों को फ़र्क कहॉ पड़ता है जी।'[५]

वर्तमान समय में सरकार की नीतियाँ कैसी है। इससे परिचित कराते हुए विनय मिश्र जी जनता को सावधान करने की कोशिश कर रहे है। सत्ताधारिओं के खिलाफ बात करना अब दुश्वार हो गया है। भ्रष्टाचार की कीचड़ में फँसी जनता और सरकार दोनों को फटकार लगाने का काम विनय मिश्र अपनी ग़ज़लों के माध्यम से कर रहे हैं। जी.एस. टी. के माध्यम से टॅक्स बढा है। जिसकी शिकायत करने पर सरकार उस पर भी टॅक्स न लगायें। यह चिंता विनय मिश्र की ग़ज़लों में दिखाई देती है। आम आदमी के दर्द की कोई कीमत नहीं है। उसपर अधिभार अधिक है। मीडिया पर सरकार का प्रत्यक्ष - परोक्ष रुप से अपना नियंत्रिण है। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की दलदल मे फँसी मीडिया की बर्बरता विनय मिश्र की ग़ज़लो में दृष्टव्य हैं-

'माफ करना देशाहित में बोलना है लाजिमी
भ्रष्ट जनता मगर सरकार उससे भी अधिक।
अब दुखों पर भी लगेगा कर मगर क्या बात है
दर्द जितना दर्द पर अधिभार उससे भी अधिक।'[६]

आम आदमी की पहचान क्या है? यह प्रश्न विनय मिश्रजी उठाते हुए पूछते हैं की मौं अगर कुछ भी नहीं हूँ तो मेरी पहचान का आधार क्या है? वैसे तो स्वयं को चौकीदार कहने वाले हमारे ढोंगी नेताओं के चेहरे का नकाब उतारकर विनय मिश्र उनके दोगलेपन को भी जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। आम आदमी को अपनी मर्जी से नचानेवाले नेताओं को चौकीदार कहे या मदारी। तथाकथित नेताओं की कथनी एवं करनीगत विसंगतियों को विनय मिश्र अभिव्यक्त करते हैं-

'अगर मैं कुछ नहीं तो फिर बताओ
मेरी पहचान का आधार क्या है?
नचाता है मुझे मर्जी से अपनी
मदारी है या चौकीदार क्या है?
सियासत है हवाओं की वगर्ना
धुँए में शौ ये छल्लेदार क्या है?'[७]

इस तरह की राजनीतिक विसंगतियों एवं विडंबनाओं ने भ्रष्ट राजनीति को बढावा देने का काम किया है। जिस कारण देश में कहीं भी कुछ अच्छी बात दिखाई नहीं देती। कृषिप्रधान कहा जानेवाला अपना देश आज पूरी तरह से उजड़ रहा है। हमारा देश भ्रष्टाचार के कारण केवल समस्याओं की उपज होकर रह गया है। अत: इस देश में घटित दंगे-फसाद, खून, चोरी, लूट, ओर लालफितशाही के अंतर्गत चलनेवाले भ्रष्टाचार पर किसी को कोई सजा नहीं मिलती। नियम, किताबें और कानून व्यवस्था केवल दिखावा बनकर रह गयी है। शोषणकारी व्यवस्था की शोषणचक्की में पिसती जनता के दुख दर्द का सफल निर्वहन करनेवाले विनय मिश्र जी की ग़ज़लों के शेर तीर के समान गंभीर घांव करते हुए अपनी सार्थकता स्वयं सिद्ध करते हैं। 'विनय मिश्र ग़ज़लों में उन विषयों को उठाते हैं जिसका सम्बना रोजमर्रा की जिंदगी से है उनके अधिकत्तर शेर छोटी बहर में लेकिन तीर के समान दिखाई देते है।'[८]

सारांश : उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि विनय मिश्र की ग़ज़लों में पतन शील वर्ग का यथार्थ है। साथ ही सामान्य जन की आशा-निराशा, संघर्ष, यथार्थ और हार-जीत की वस्तुस्थिति उनकी ग़ज़लों में देखने को मिलती है। राजनीतिक क्रूरताओं, विसंगतियों एवं राजनीतिक यथार्थ को उनकी ग़ज़लें उजागर करती हुई परिवर्तन की आस लेकर आम आदमी के दु:ख, दर्द एवं समसयाओं को पाठको के सामने लाने का सफल प्रयास करती हैं। कुल मिलाकर विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना चरमोच्य रुप में पायी जाती हैं।

संदर्भ :

१. www.gadyakosh.com
२. विनय मिश्र, तेरा होना तलाशूँ, पृ.३२
३. वही, पृ. ४५
४. वही, पृ. ५३
५. वही, पृ. ५४
६. वही, पृ. ६०
७. वही, पृ. ७०
८. www.jakhira.com